सिखाने के लिये अंगुली को दूध में भिगोकर मुँह में डाले जिससे बच्चा उसको चूसना शुरू कर देता है, फिर बछड़े–बछड़ियों का मुँह दूध के बर्तन में ले जाये और अंगुली बाहर निकाल लें। ऐसा करने पर बच्चा बर्तन से दूध पीना शुरू कर देता है। इसके अलावा बछड़े–बछड़ियों को निप्पल द्वारा भी दूध पिलाया जा सकता है, जिससे बछड़े / बछड़ियाँ प्राकृतिक विधि की तरह दूध पीते है।

विटामिन्स की पूर्ति

बछड़े–बछड़ियों को जब पूर्ण दूध पिलाना बन्द कर देते है तो उनके राशन में विटामिन ए और डी की पूर्ति अनिवार्य हो जाती है। इनकी पूर्ति के लिये बच्चों को मछली का तेल पिलाना चाहिए जो कि विटामिन डी का अच्छा स्त्रोत है। इसके अलावा सूर्य के प्रकाश से भी बछड़े–बछड़ियों को पर्याप्त विटामिन डी प्राप्त होती है तथा राशन में विटामिन डी की पूर्ति के लिये कोई सप्लीमेंट बछड़े–बछड़ियों के आहार में मिलाकर खिलाना चाहिए।

आवास प्रबन्धन

1. बछड़े–बछड़ियों के लिये खुला आवास हो जिसमें घूमने के लिये कम से कम 25 से 30 वर्गफुट जगह होनी चाहिए।
2. इसके साथ–साथ आवास इस तरीके से बना हो जिसमें सर्दी के मौसम में बच्चों को पर्याप्त मात्रा में धूप मिले और सर्दियों में चलने वाली ठंडी हवाओं से भी बचाव हो सके।
3. आवास ऐसी जगह पर होना चाहिए, जहाँ पर नमी और गन्दगी न हो, ताकि बछड़े–बछड़ियों को होने वाली संक्रामक बीमारियों से बचाया जा सके।

4. आवास सतह को ठंड से बचाने के लिये रोशनदान व दरवाजों पर कपाट व पल्ले लगाने चाहिए। आवास को विद्युत हीटर द्वारा या फिर आग जलाकर गर्म कर सकते है, जिससे बछड़े–बछड़ियों को ठंड से बचाया जा सके।
5. बछड़े–बछड़ियों के रहने के स्थान पर अच्छा साफ–सुथरा बिछावन होना चाहिए, ताकि वह आराम से उठ बैठ सके। लकड़ी के बुरादे अथवा पुआल का प्रयोग बिछावन के लिये सबसे अधिक आरामदायक रहता है।
6. आवास में हर समय स्वच्छ व ताजे पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क करें:
निदेशक प्रसार शिक्षा
प्रसार शिक्षा निदेशालय
दूरभाष : 0510-2730808
ई–मेल : directorextension.rlbcau@gmail.com

प्रकाशित:
कुलपति
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381

प्र.शि.नि./त.प्र.सा.-फोल्डर/2024/95

सर्दियों के दौरान नवजात बछड़े-बछड़ियों का पालन पोषण एवं प्रबन्धन

गौरव कुमार
अमित सिंह विशेन
प्रमोद कुमार सोनी
एवं
वी.पी. सिंह

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय

प्रसार शिक्षा निदेशालय
रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
झाँसी 284003, उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाईट : www.rlbcau.ac.in

पशुओं में मनुष्यों की अपेक्षा मौसमी प्रभावों के सहन करने की क्षमता अधिक होती है। लेकिन अधिक सर्दी या गर्मी का मौसम उनको सामान्य मौसम से ज्यादा प्रभावित करता है। सामान्यतः पशु अपने शरीर के तापमान को नियंत्रित कर लेते हैं। परन्तु नवजात पशुओं में यह तापमान नियंत्रण प्रणाली अविकसित होने के कारण उन पर मौसम का विपरीत प्रभाव जल्दी और ज्यादा पड़ता है। सर्द मौसम के दौरान नवजात बछड़े–बछड़ियों के स्वास्थ्य और शारीरिक वृद्धि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। क्योंकि बछड़े–बछड़ियों के शरीर में खाद्य–पदार्थों के पाचन से उत्पन्न होने वाली ऊर्जा जो शारीरिक वृद्धि व विकास के लिये प्रयोग होनी चाहिए, यद्यपि यह ऊर्जा उनके शारीरिक तापमान को नियंत्रित रखने में उपयोग हो जाती है, जिसके कारण इनका शारीरिक विकास धीमा तथा कमजोर हो जाते हैं।

बछड़े–बछड़ियाँ शारीरिक रूप से कमजोर होने पर ये अनेक प्रकार के रोग (दस्त, निमोनिया आदि) से ग्रसित हो जाते हैं। इससे इनकी मृत्युदर बढ़ जाती है। सर्दी के मौसम के दौरान जब तापमान 15°C या इससे नीचे जाता है तो 21 दिन से कम उम्र के नवजात बछड़े–बछड़ियों पर सर्दी के प्रकोप का दुष्प्रभाव होने लगता है। लेकिन 21 दिन से अधिक आयु के बछड़े–बछड़ियों में यह दुष्प्रभाव 4°C से कम तापक्रम पर होना शुरू होता है। जब वातावरणीय तापमान 0°C से नीचे जाता है तब नवजात बछड़े–बछड़ियों को शरीर तापक्रम को नियमित रखने के लिये अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पशुपालक को विभिन्न आधुनिक प्रबन्धन की जानकारी होना आवश्यक है।

बछड़े-बछड़ियों पालने की पद्धतियाँ

1. **प्राकृतिक विधिः** बछड़े–बछड़ियों को गाय के साथ रखकर पालना।
2. **कृत्रिम विधिः** बछड़े–बछड़ियों को गाय से अलग रखकर पालना।

प्राकृतिक विधि

इस प्रक्रिया में बछड़े–बछड़ियों को गाय/भैंसों के साथ रखकर पाला जाता है और गाय को दूध दुहने से पहले व दुहने के बाद, दोनों समय नवजातों को दूध पिलाया जाता है। परन्तु इस विधि में इन नवजातों को आवश्यकतानुसार दूध नहीं मिल पाता है। इनको दूध कम या ज्यादा मात्रा में मिलता है। यदि दूध की मात्रा ज्यादा हो जाती है तो बछड़े/बछड़ियों को दस्त की शिकायत हो सकती है तथा दूध की मात्रा कम होने पर बछड़े–बछड़ियों का शारीरिक विकास ठीक से नहीं हो पाता है।

कृत्रिम विधि

इस विधि में नवजात बछड़े/बछड़ियों को जन्म के 24 से 48 घण्टे के अन्दर गाय से अलग कर देते है। इस प्रक्रिया में इनको वजन व उम्र के अनुसार दूध पिलाकर पालते है। इस विधि में बछड़े– बछड़ियों को कम या ज्यादा दूध पी जाने वाली कठिनाई से बचाया जा सकता है, तथा बछड़े–बछड़ियों की शारीरिक वृद्धि कम होने व रोगी बछड़े–बछड़ियों की छटनी भी की जा सकती है।

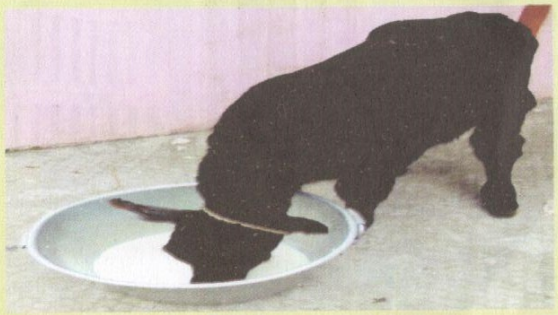

जन्म के तुरन्त बाद देखरेख

जन्म के उपरान्त बछडे/बछड़ियों के नाक, मुँह और कान साफ कर देने चाहिए। फिर पूरे शरीर को तौलिये से साफ करने के बाद गाय को बछड़े/बछड़ी को चाटने दें। जिससे नवजात बच्चे का रक्त संचार बढ़ता है तथा बच्चें में स्फूर्ति आती है। बछड़े/बछड़ियों को ठंड से बचाने के लिये उचित प्रबन्ध करना चाहिए। इसके अलावा उनकी नाभिनाल को 5 से.मी. शरीर से छोड़कर काट देना चाहिए और इसके ऊपर टिन्चर आयोडीन लगाना चाहिए।

नवजात बछड़े/बछड़ियों का पहले तीन दिन का पोषण

बछड़े–बछड़ियों को सबसे पहले गाय से निकलने वाला दूध जिसको खीस कहते हैं, पिलाना चाहिए। खीस बछड़े–बछड़ियों को उसके शारीरिक भार का 1/10 भाग देना चाहिए। खीस पिलाने के निम्नलिखित लाभ है–

1. खीस नवजात बछड़े–बछड़ियों के पेट की सफाई कर पाचकता को बढ़ाता है।
2. खीस के अन्दर पायी जाने वाली ग्लोबिन प्रोटीन से बछड़े–बछड़ियों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, जिससे बछड़े–बछड़ियाँ जल्दी बीमार नहीं होती है।
3. खीस के अन्दर सामान्य दूध की तुलना में प्रोटीन अधिक होती है, जोकि शारीरिक विकास में सहायक होती है।
4. खीस के अन्दर विटामिन (ए, डी, बी) व खनिज पदार्थ, (कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं फास्फोरस) आदि सभी तत्व प्रचुर मात्रा में पाये जाते है।

प्रारंभिक उम्र में देखरेख

प्रथम माह में यदि बछड़े–बछड़ियों की उचित देखभाल नहीं की जायेगी तो वह सामान्य वद्धि नहीं कर पायेंगे। बछड़े–बछड़ियों को ठंड से बचाने के लिये कपड़ों से बनी जैकेट या आवरण का प्रयोग भी किया जा सकता है। ऐसा करने से पशु शरीर से नष्ट होने वाली उष्मा को कम कर सकते हैं। जिसके कारण उपलब्ध ऊर्जा के उपयोग से बछड़े–बछड़ियों की शारीरिक वृद्धि को बढ़ाया जा सकता हैं।

बछड़े–बछड़ियों की वृद्धि सही तरह से होती रहे, इसके लिये निम्न प्रक्रियायें लगातार अपनानी चाहिए।

बछड़े-बछड़ियों को दूध पिलाना

जन्म के बाद बछड़े–बछड़ियों को कुछ समय तक खाने को नहीं देना चाहिए। बछड़े–बछड़ियों को दूध पीना